डा. के. पी. शहा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण कॉलेज,
कोल्हापुर
तथा
स्नातकोत्तर अध्यापक
एवं शोध-निर्देशक,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
(महाराष्ट्र)

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री विनायक बापू कुरणे ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध ` रांगेय राघव की प्रतिनिधि कहानियों का अनुशीलन` मेरे निर्देशन में सफलता-पूर्वक पूरा किया है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है। इसमें शोधार्थी ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही है। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृती है। श्री विनायक बापू कुरणे के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

(डा. के. पी. शहा)
शोध निर्देशक

कोल्हापुर।
20 मई, 1999

प्रख्यापन

`रांगेय राघव की प्रतिनिधि कहानियों का अनुशीलन` लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम. फिल् . (हिन्दी), उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

(श्री विनायक बापू कुरणे)
शोध छात्र

कोल्हापुर।
20 मई, 1999

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री विनायक बापू कुरणे द्वारा प्रस्तुत `रांगेय राघव की प्रतिनिधि कहानियों का अनुशीलन` लघु शोध-प्रबन्ध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर।
20 मई, 1999

अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

प्राक्कथन

प्राक्कथन

डा. रांगेय राघव जी का व्यक्तित्व वस्तुत: बहुमुखी है। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में कहानी, उपन्यास, नाटक, काव्य, जीवनी, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, संस्मरण आदि विविध विधाओं पर लेखनी चलाई है। जब मैंने बी. ए. में रांगेय राघव जी की `गदल` कहानी पढी तब यह पता चला कि रांगेय राघव जी एक सामाजिक कहानीकार है। यह कहानी पढ़ने के बाद उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानने की भावना मेरे मन में जाग उठी । मेरे जैसे सामान्य छात्र तो डा. रांगेय राघव जी जैसे महान साहित्यकार की सभी कृतियों पर अपने विचारों को प्रकट नहीं कर सकता। इसीलिए मैंने उनकी प्रतिनिधि कहानियों को चुनकर उनका सामान्य परिचय, चित्रित समस्याएँ, विशेषताएँ और हिन्दी कहानी साहित्य में उनका योगदान आदि को लेकर अपना लघु-शोध-प्रबंध का विषय बनाया।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का अनुसंधान करते समय मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न निर्माण हुए -

1. रांगेय राघव जी का व्यक्तित्व किस प्रकार का था ? तथा उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में कौन-कौन सी विधाओं पर लेखनी चलाई ?
2. रांगेय राघव जी की कहानियाँ किस धरातल पर आधारित है ?
3. रांगेय राघव जी की कहानियों में कौन-कौन सी समस्याएँ चित्रित हुई है ?
4. रांगेय राघव जी की कहानियों की कौन-कौन सी विशेषताएँ उद्घाटित हुई है ?
5. रांगेय राघव जी का हिन्दी कहानी साहित्य में क्या योगदान है ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर पाने की कोशिश प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में की है।

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का विभाजन पाँच अध्यायों में किया है।

प्रथम अध्याय - रांगेय राघव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

इसके अंतर्गत मैंने सर्वप्रथम रांगेय राघव का जीवन परिचय दिया है। इस संदर्भ में वंश परम्परा, पारिवारिक संस्कार, शिक्षा, विवाह तथा उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। साथ ही

उनकी साहित्य साधना के दौर का उल्लेख करते हुए उनकी विविधयामी साहित्य रचनाओं पर प्रकाश डाला है। अंत में राघव जी की समग्र रचनाओं की सूची प्रस्तुत की है।

द्वितीय अध्याय - रांगेय राघव की कहानियों का सामान्य परिचय।

प्रस्तुत अध्याय में रांगेय राघव की कहानियों का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया है। इसमें कहानी के बारे में मैंने अपने विचार भी प्रस्तुत किए है।

तृतीय अध्याय - रांगेय राघव की कहानियों में चित्रित समस्याएँ।

उक्त अध्याय के अंतर्गत पहले सामाजिक समस्याएँ के अंतर्गत पति-पत्नी के बनत-बिगडते संबंध, अंधश्रद्धा, वासनाग्रस्तता, भ्रष्टाचार, व्यसनांधता, रिश्तों का खोखलापन, नारी उपभोग का साधन तथा प्रेम इन समस्याओं का चित्रण किया है। साथ ही आर्थिक समस्याएँ, शोषितों की समस्याएँ, साम्प्रदायिकता की समस्याएँ और शरणार्थियों की समस्याएँ आदि का विवेचन भी इसमें किया है।

चतुर्थ अध्याय - रांगेय राघव की कहानियों की विशेषताएँ।

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत कहानियों की विशेषताएँ चित्रित है। इसमें विशेषताओं के आधार पर कहानियों का विवेचन किया है। इसमें सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करनेवाली कहानियाँ, मजदूर और किसानों की संघर्ष की कहानियाँ, अन्धविश्वास एवं रूढि परम्परा का चित्रण करनेवाली कहानियाँ, यथार्थ का चित्रण करनेवाली कहानियाँ आदि विशेषताओं पर कहानियाँ का वर्गीकरण किया है।

पंचम अध्याय - हिन्दी कहानी साहित्य में रांगेय राघव का योगदान।

इस अध्याय के अंतर्गत राघव जी का हिंदी कहानी साहित्य में योगदान इस पर चर्चा की है। इसमें रांगेय राघव पूर्व कहानी, रांगेय राघव और समकालीन लेखक, रांगेय राघव की कहानियों का अलगपन और हिन्दी कहानी साहित्य में रांगेय राघव का योगदान इसका विवेचन किया है।

उपसंहार :-

रांगेय राघव की प्रतिनिधि कहानियों का सामान्य परिचय, समस्याएँ, विशेषताएँ और उनका हिन्दी कहानी साहित्य में योगदान आदि विषयों पर सोचने के बाद जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में सार के रूप में रखा गया है।

संदर्भ-ग्रंथ- सूची :-

इस शोध-प्रबंध के अन्त में संदर्भ ग्रंथों की सूची जोड दी है, जो मुझे इस शोध कार्य के सिलसिले में विशेष सहायक सिद्ध हुई।

ऋण-निर्देश :-

किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए योजना बनानी आवश्यक होती है। प्रस्तुत शोध-कार्य को सम्पन्न करने के लिए मैंने भी योजना बनाई थी। जिसके कार्यान्वयन के समय आई कठिनायों को सुलझाने के लिए मुझे कई व्यक्तियों और संस्थाओं की सहायता लेनी पड़ी। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध डा. के. पी. शहा जी के कृपापूर्ण निर्देशन में लिखा गया है। अपनी व्यस्तताओं के बावजूद भी सतत प्रेरणा और प्रोत्साहन देकर आपने मेरी सहायता की है। इस कार्य के संबंध में आयी हर कठिनाई में आपने मेरा साथ दिया, इसके लिए मैं आपका अत्याधिक ऋणी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डा. पी. एस. पाटील जी, डा. अर्जुन चव्हाण जी, डा. व्ही. के. मोरे जी, डा. बाबासाहेब पोवार जी, डा. सुमित्रा पोवार जी आदि गुरूवर्यों का आशिर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा है। उनके प्रति मैं सविनय आभार प्रकट करता हूँ।

मेरी शिक्षा-दीक्षा तथा प्रस्तुत शोध-कार्य की पूर्ति के लिए अनंत कष्ट उठानेवाले मेरे आदर्शवादी माता-पिता श्री बापूसाहेब व सौ. संपदा, दादी माँ कै. कोंडूआई, मेरे भाई दिलीप, महावीर, मेरी भाभियाँ सौ. वंदना, सौ. छाया, बहन सौ. नंदा तथा मेरी काकी सौ. सुशिला, काका श्री बाबुराव कांबळे और उनका परिवार आदि के आशिर्वाद मुझे नित्य सत्कर्म की प्रेरणा देते रहे है, जो विशेष उपयोगी सिद्ध हुए है। अत: आजन्म मैं उनके ऋण में रहूँगा।

मेरे स्नेही प्रा. मोहन सावंत, श्री किरण पाटोळे, सौ. कल्पना पाटोळे, श्री बळवंत पाटोळे और उनका परिवार आदिओं की प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहयोग ही मेरा बल है। इस शोध-कार्य को सम्पन्न

बनाने में आपने मेरी पूरी आर्थिक तथा मानसिक मद्द की है। अत: मैं आपके ऋण में रहना ही पसंद करूँगा।

मेरे स्वजन डा. भारत कुचेकर, प्रा. कलंदर मुल्ला, श्री वसंत दिंडे, अविनाश शिंदे, राजू कटकोळे, शरद माने तथा नागोजीराव पाटणकर हायस्कूल, कोल्हापुर के अध्यक्ष, सेक्रेटरी, प्रधानाध्यापक, सभी अध्यापक वर्ग और सेवक वर्ग आदि ने इस कार्य को सम्पन्न बनाने में मेरी सहायता की है। अत: मैं उनके प्रति भी कृतज्ञ हूँ।

इस कार्य को सम्पन्न बनाने के लिए शिवाजी विश्वविद्यालय के बॅ. खर्डेकर पुस्तकालय का सहयोग प्राप्त हुआ। अत: इस पुस्तकालय के सभी सेवकों का मैं आभारी हूँ।

इस लघु शोध-प्रन्बध का टंकन ऐश्वर्या झेरॉक्स कोल्हापूर के श्री मिलिंद भोसले जी ने बड़ी लगन से किया है। अत: मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

इस शोध -कार्य को पूरा करने में जिन ग्रंथों का प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है, उन ग्रंथों के विद्वान लेखकों का भी मैं ऋणी हूँ। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध को सम्पन्न बनाने में जिनसे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है उन सभी के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस कृतज्ञताज्ञापन के साथ मैं अपना यह लघु शोध-प्रबन्ध अत्यन्त विनम्रता के साथ पाठकों तथा विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

कोल्हापुर।

दि. 20 मई, 1999

(श्री विनायक बापू कुरणे)